स्कॉलर्स

विनोद डी. रंगारी
'सुदान्त'

Notion Press

No.8, 3rd Cross Street,
CIT Colony, Mylapore,
Chennai, Tamil Nadu – 600004

First Published by Notion Press 2021
Copyright © Vinod D. Rangari 'Sudant' 2021
All Rights Reserved.

ISBN 978-1-63669-741-3

This book has been published with all efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. However, the author and the publisher do not assume and hereby disclaim any liability to any party for any loss, damage, or disruption caused by errors or omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the author nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken or advice rendered or accepted on the basis of this work. For any defect in printing or binding the publishers will be liable only to replace the defective copy by another copy of this work then available.

अनुक्रमणिका

मनोगत		*7*
प्राक्कथन		*11*
शुभकामनाएं		*15*
पर्व-1	'स्कॉलर्स' विस्मृति से स्मृति में!	19
पर्व-2	आर आर एल, जम्मू की ओर	23
पर्व-3	पारिवारिक परिवेश	32
पर्व-4	स्वप्न की 'सुनिति' - अपॉर्च्युनिटी	38
पर्व-5	पुस्तकालय बना मार्गदर्शक	43
पर्व-6	शोधकार्य प्रगतिपथ पर	50
पर्व-7	मित्रता का धर्म	57
पर्व-8	अलौकिक अनुभूतियां...	68
पर्व-9	पी एचडी अधर में	83
पर्व-10	कश्मीर से लेह-अद्‌भुत यात्रा!	94
पर्व-11	दर्द के रिश्ते	105
पर्व-12	कविताएं- भावनाओं की अभिव्यक्ति	117
पर्व-13	कुछ अन्य संस्मरण	130
पर्व-14	नागपुर आवागमन	155
पर्व-15	सुखद-दुःखद अनुभव	162

पर्व-16	अनुसंधान सम्मेलनों में सहभागिता	174
पर्व-17	वह निवास-वह प्रयोगशाला	179
पर्व-18	सर्वोपरि उपलब्धि	185
पर्व-19	साध्य की सिद्धि और नए उत्तरदायित्व	194
पर्व-20	उपसंहार...	209

पर्व–1

'स्कॉलर्स' विस्मृति से स्मृति में!

स्मृति-पटल पर कोई घटना, वस्तु या दृष्य एक बार अंकित हो जाता है, समय के प्रभाव से वह विस्मृत अवश्य हो सकता है, किंतु मिटता नहीं है। स्मृतियां कितनी ही पुरानी और सैकड़ो, हजारों या लाखों की संख्या में ही क्यों न हों, वह स्मृति पटल पर संरक्षित रहती है। कोई घटना या प्रसंग-विशेष पर वह उभर आती है और मनुष्य तत्कालीन समय में पहुंच जाता है। मेरे साथ भी यही घटा, जब 'अुंगली की अस्थि' का स्पर्श मेरे हाथों में हुआ और मेरे स्मृति-पटल पर आर आर एल, जम्मू की वो भूली-बिसरी यादें चलचित्र की तरह घूम गई।

भोर का संकल्प

सन् 2019, माह दिसंबर के अंतिम सप्ताह की सर्द रात बीत रही थी। सुबह के लगभग 4.30 बजे भोर की बेला थी। पौ भी न फटी थी और न ही आकाश में सूर्य के आगमन का कोई संकेत दृष्टिगोचर हो रहा था। मैं नियमित क्रमानुसार जाग गया था। तब अचानक विचार जगा, सन् 1984 से 1989 के घटनाचक्र के परिप्रेक्ष्य में जीवन को क्रमबद्ध करना चाहिए। ध्यान-साधना मेरा नियमित क्रम है। भोर की बेला का विचार था, अतः शुद्ध-संकल्प बनते देर न लगी। परिणामतः मेरे यह अविस्मरणीय संस्मरण आपके हाथों में हैं। आशा और विश्वास केवल इतना है, मेरे संस्मरण प्रेरणास्पद बने।

भूमिका

इस्वी सन् 1984 से 89 तक, पांच वर्षों के परिप्रेक्ष्य में जीवन को देखने के विचार की पार्श्वभूमि में एक महत्वपूर्ण कारण है। यह कालावधि मेरे जीवन का वह संधिकाल है, जहां मैंने जीवन को उभरते और डूबते हुए अनुभव किया है। इस कार्यकाल में मैंने अपने साध्य को साधा, भारत की विडंबना को देखा! इस कार्यकाल के बाद ही मेरी जीवन यात्रा अर्थार्जन करने की दिशा में भी बढ़ी है। यह एक ऐसा संधिकाल है, जैसे बीत रही रात और दिन के आगमन की भोर की बेला हो।

सन् 2012, माह अप्रैल

उन दिनों मैं नागपुर के एक फार्मसी संस्थान में प्राचार्य के पद पर कार्यरत था दिन अचानक वह दुःखद अविस्मरणीय घड़ी आई, जब मुझे टेलीफोन द्वारा मेरे स्नेही और आत्मीय मित्र देवेंद्र सिंह यादव के भाई श्री बलदेव सिंह यादव की से जानकारी मिली, "बड़े भाई साहब देवेंद्र सिंह यादव अब इस संसार में नहीं समाचार हृदय विदारक था, कोई कारण ही नहीं था कि यादव असमय ही काल के में समा जाए! हम दोनों ने देश की प्रतिष्ठित क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (रि रिसर्च लेबोरेटरी), जम्मू में एक साथ ही पी एचडी के लिए शोध कार्य किया था। मुरैना, मध्यप्रदेश के रहने वाले थे।

कैसे संभव है कि हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ट व्यक्ति असमय ही काल के गाल में जाए? भिंड-मुरैना और चंबल ये नाम प्रसिद्ध हैं, बागी और डाकुओं के लिए। चंबल घाटी इतनी भयावह है कि इन घाटियों में दस हजार लोग आसानी से छिप हैं। इन घाटियों का जाल मीलों लंबा और उत्तरप्रदेश व राजस्थान की सीमाओं विस्तारित है। चंबल एक नदी का नाम है। कहावत प्रसिद्ध है कि चंबल के पानी तासीर है, जो किसी भी सताए मनुष्य को बागी या डाकू बना देता है। वहां के निवासी भी बहादुर और निडर प्रवृत्ति के होते हैं। इसी तरह की बहादुर और प्रवृत्ति का मेरा मित्र यादव भी था। आर आर एल, जम्मू में जहां हमारी मित्र चर्चे हुआ करते थे, वहीं यादव के व्यक्तित्व और सुदृढ़ व बलिष्ठ शरीर की प्रशं की जाती थी। आज वह नहीं रहा। यह मेरे लिए गहरे दुःख और विषाद की बात

मैंने जब भी आर आर एल में व्यतीत कार्य काल का स्मरण किया, उन खट्टी यादों में खोता ही रहा हूं। यह स्मरण मेरे लिए किसी ध्यान की अवस्था से कभी नहीं रहा, क्योंकि उन स्मृतियों में डूबकर मैं समय और काल से बाहर चला जात यह मेरे जीवन का सबसे सुंदर और कभी न भुलाए जाने वाला समय था।

सत्य से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता था, न चाहते हुए भी मुझे स्वीकार करना कि मेरा परम स्नेही मित्र अब प्रत्यक्ष में कभी मुझे नहीं मिलेगा। अंतर में कर्तव्य जागा। अविलंब मध्य प्रदेश के मुरैना में, जहां दिवंगत मित्र ने संसार को अलविदा मुझे जाना होगा! मैंने अपने कॉलेज ऑफ फार्मेसी के सचिव को वस्तुस्थिति से अ कराया और अवकाश का निवेदन किया। मेरी भावदशा को देखते हुए सचिव म ने मुझे अवकाश प्रदान किया। अब मेरे सामने चुनौती यह थी कि जिस ट्रेन से के लिए रवाना होना है, वह मात्र आधे घंटे पश्चात ही थी। अविलंब मुझे हर ह यह ट्रेन पकड़नी ही थी।